International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 41-42

मुक्ति बोध चेतस् के मुक्तिबोध : समसामयिक संदर्भ (कबीरदास, निराला एवं मुक्तिबोध)

प्रो0 राजकुमार लहरे

सहायक प्राध्याक (हिन्दी), शासकीय पी0डी0 वाणिज्य एवं कला, महाविद्यालय, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

कबीरदास (सामाजिक बोध के नेता) पं0 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (स्वाधीन चिंतन के अग्रदूत) और गजानन माधव मुक्तिबोध (स्वतंत्र भारत के पथ प्रर्दशक) हिंन्दी साहित्य के इतिहास में नवचेतना, अवबोध तथा अभिव्यक्ति के प्रकाश–स्तंभ हैं। जहां से व्यक्ति, परिवार, समाज और देश दिशा निर्देशित होता रहा है। समकालीन समस्याओं– नक्सल व आतंकवाद, संकर संस्कृति का प्रभाव, राजनीतिक दलीय स्थिति तथा ज्ञानियों के द्वारा अशिक्षितों पर अंधाधुन्ध ज्ञानात्मक प्रहार, चेतना का गुटीय विकास से मुक्ति, पर्यावरणीय चेतना जैसे समस्याओं का सही व सार्थक निदान सर्व चेतना के विकास द्वारा संभव है। जहॉ सभी प्राणि 'वसुधैव कुटुम्बकम', व 'मानव मानव एक समान' भाव का सत्यानुभूति कर विकास कर सके। इसी को 'रामराज्य' 'विश्वमंदिर' व वास्तविक लोकतंत्र कह सकते हैं। जहॉ सबका समान रुप से भाग हो। और यही ब्रम्हानंद की स्थिति होगी।

मूल शब्दः मुक्तिबोध, समसामयिक संदर्भ, कबीरदास, निराला।

प्रस्तावना

कबीर का घर फूॅक, अल्हड़ मस्ती, साधु, ज्ञानी, संत, और अंततः योगी स्वभाव, व्यक्ति को आत्म नियंत्रण के उपाय और सामाजिक बोध से समसामयिक युगबोध तथा समाज को दिशा निर्देश हिन्दी के हजार वर्षों के इतिहास में विलक्षण व अद्वितीय है। इनका गृह–त्याग आत्म चेतना का विस्तार है। जहां दया, ममता, करुणा जैसे भावों का साधारणीकरण जन मानस के लिए होता है। जो जाति, वर्ग, सम्प्रदाय और धर्म के एकता व समन्वय के रुप में अभिव्यक्ति हो पाया है। जिसे मानवता कहते हैं। जो बीजक में साखी, सबद, रमैनी के रूप मे मिलता है। कबीर ने मानव मानव एक समान तथा सादा जीवन उच्च विचार जैसे भाव को प्रतिष्ठित किया। ये दलितों–शोषितों के हिमायती थे; और सभी को एक मंच में लाने का प्रयास करते रहे। जिससे समाज में उॅच–नीच, छुत–अछुत, गरीब–अमीर या अन्य भेद–भाव किसी प्रकार से न हो।ये मुक्ति बोध के सच्चे प्रहरी व मार्गदर्शक थे। जो मानव व समाज को विद्रूपताओं से मुक्त करना चाहते थे। इसीलिए कबीरदास ने स्पष्ट कहा है–

1 '' कहै कबीर एक राम जपहू रे हिंदू तुरक न कोई।''
2 '' एक बूंद एक मल मुतर, एक चाम एक गुदा।।
एक जाति थै सब उपजा, कौन ब्राम्हण को सुदा।।''

कबीर ग्रंथावली, पृ 21

मुक्ति बोध के लिए व्यक्ति में आत्म चेतस् हो। और कबीरदास इसके लिए सदैव सचेत रहे। यही कबीर का निरालापन है। और एक महापंथ है। कबीर ज्ञान को सर्वजनिन करना चाहते थे और ज्ञान के बल पर मानवता की स्थापना। कबीर सच्चे मायने में साधु संत योगी और महात्मा थे– एक महामानव।

पं0 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला आधुनिक युग में कबीर के मानवता को नव ज्ञान, भावबोध, शिल्प विधान समसामियकता के साथ मुक्ति बोध के लिए अवतरित हुआ। जो जूही के कली में प्रथमतः दिखायी पड़ा–

''विजन वन वल्लरी में सोती थी सुहाग भरी जूही की कली'

जूही की कली : निराला

बादल राग, कुकुरमुत्ता, तोड़ती पत्थर, सरोज स्मृति3. जैसे कविताओं में आधुनिक युग के सजग प्रहरी अपने मुक्त भाव, विचार एवं अनुभूति में, लेखन व सामाजिक बंधन व सोच की जड़ता को तोड़ते हुए; व्यक्तिगत जीवन में सबके लिए मुक्तिबोध के साथ प्रकाश स्तंभ बना जो साहित्य में देखने को मिलता है। निराला सुख व दुख को समान रुप से ग्रहण किया। जो मुक्ति बोध की ओर उन्मुख होता है। तथा साहित्य को समाज से पहली बार जोड़ने का कार्य निराला ने छायावाद युग में किया; कि आदमी साहित्य अध्धयन से भी सामाजिक वर्जनाओं, आडम्बरों, पाखंडों से मुक्त हो सकता है। या साहित्य से सामाजिक बदलाव संभव है। यही ज्ञान का सार्थक रुप, यही निराला का निरालापन है। और ये इसके लिए जीवन भर संघर्षरत् रहे।

गजानन माधव मुक्तिबोध सहज संवेदना की बातें करते हैं–संवेदनात्मक ज्ञान से ज्ञानात्मक संवेदना की बातें। जिससे व्यक्ति, समाज व देश सभी मुक्ति बोध के साथ सर्वांगीण विकास कर सके। किसी का जीवन रोटी, कपड़ा, मकान, रुढ़ि(रीति रिवाज), वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म की खांचे में न ढल जाय। वह मुक्तावस्था में अध्धयन, चिंतन–मनन और अभिव्यक्त हो। यह आज इक्कसवीं सदी में नितांत आवश्यक है कि, समाज इनकी कविताओं से आज प्रेरणा लें। मुक्तिबोध 'भूल–गलती'4. कविता में इतिहास के इसी भूल की ओर संकेत करता है जो व्यवस्था के नाम पर बंधनहै। उस भूल–गलती की सजा आज (राजतंत्र, कुलीन तंत्र, अधिनायक तंत्र, लोकतंत्र) धार्मिक रुप में (वर्ग, जाति, सम्प्रदाय) रंग–भेद रुप में (गोरा, काला) बनावट के रुप में (आर्य, द्रविड़, मंगोलयाड, हब्सी, बुशमेन आदि) विश्व में व्याप्त है।

आज संवेदनात्मक ज्ञान के जगह ज्ञानात्मक संवेदना ने स्थान ग्रहण कर लिया है। जिसकी अभिव्यक्ति 'ब्रम्ह राक्षस', अंधेरे में4. में हुआ है। जो एक अंध गुफावासी है (ऋषि, मुनि, ज्ञानियों के रुप में) एकांतवासी हो सहज जीवन से पलायित है। अपने ज्ञान–गुफा में ही आत्मचेतस् को संकुचित कर बैठा है और सोचता है कि मैं ही संवेद्य पुरुष हूॅ, जागरुक हूॅ । सोचता है विश्व बंधुत्व व विराट चेतना का व्यवस्थापन कर्त्ता हूॅ। यह चेतना से जब तक समाज मुक्त नहीं होगा तब तक हमारा युग 'अंधेरे' में रहेगा और अंधेरे को ही उजाला मानेगा। इसीलिए आज अधिकार चर्चा सर्वत्र सुनाई पड़ता

है– विभिन्न सम्मेलनों, आयोजनों व उपक्रमों के रुप में, संघ, समिति, संस्था के द्वारा। कर्त्तव्य और सेवा की भाव गौण सा हो गया है जिससे मानवता स्थापित हो। आज का युग विर्मशों का युग बन गया है। जिसमें विकलांग, बच्चों, महिला व समाज के असंगठित वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म विषय, जन चेतना, भाव संवेद्यना कालांतर में लाफ्फाजों के शब्द आडम्बर न होकर किसी व्यवस्था में ढल जाय।

मुक्तिबोध के कविता में काव्य अभिजात्य से मुक्ति तथा सत्य संवेद्य के ज्ञानात्मक सहज अभिव्यक्ति से रहा है। इसीलिए इनके काव्य में गुफा, खण्डहर, घुघ्घु, कौआ, चमगादड़, अंधेरी कोठरी, सूनसान रास्ता, तथा निर्जन बावड़ी, जैसों की अभिव्यक्ति एक आवाज बनकर उभरा है। वस्तुतः ये भी समाज के विकास के लिये आवश्यक हैं। व्यक्तित्व विकास में सहायक रोमानी दुनियॉ से दूर वास्तविक धरातल पर चलने वाला भाव संगुफन को बिम्ब, प्रतीक, मिथक आदि सहज व ग्राह्य बनाने वाला।

मुक्तिबोध का सोच, संवेद्य भाव, भाषा सभी क्षेत्रों में समाज व देश के प्रति वर्तमान व्यवस्था से मुक्ति रहा। जिसके लिए जनक्रांति को ग्राहय मानते थे। मानव जीवन सिर्फ रोटी, कपड़ा, मकान के लिए न हो, उससे उपर सेवा, सहसोग व संम्पर्क भावों के प्रति सोच सके, ऐसी व्यवस्था पर जोर देता रहा। मुक्तिबोध में सत्यबोध को प्रगट करने की एक अदम्य साहस व तीव्रता तथा मन व मस्तिष्क में सामंजस्य स्थापन की चाहत सर्वत्र मिलता है, और दो मुॅहे चेहरा से उतना ही नफरत। मुक्ति बोध और अभिव्यक्ति एक विलक्षण प्रतिभा है, जो मुक्तिबोध में भरपूर मिलता है। मुक्तिबोध की चेतना समाज, देश तथा अंधविश्वास व पुरातन ज्ञान के बोझ से बोझिल व्यक्ति, समाज व देश के जीवन में उदार विराट मस्तिष्क जो मन तक उतरा हो, सीढ़ी हो, रास्ता हो, पहिया हो, जिस ज्ञान से आगे बढ़ सके।

आज के युग में जब सभी ओर सर्वांगीण विकास की बातें हो रहा है, तब सही दिशा निर्देश मुक्तिबोध से लिया जाय। जब तक सही दिशा में ज्ञान नहीं जायेगा (नैतिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक या कोई अन्य) तब तक पक्की सड़कें, नालियॉ, उॅचे भवन, उद्योग, बनाने की कोई आवश्कता नहीं। ज्ञानात्मक जन जागरुकता पहले हो फिर नव निर्माण की बातें। अतः आज व्यक्ति, समाज, देश के विकास के लिए कहीं साहित्य की भूमिका निर्धारित हो तो मुक्ति बोध की चेतना सर्वत्र उपयोगी होगा। इसलिए मुक्तिबोध चेतस् (साहित्य) का पुनः अवलोकन, अनुशीलन आवश्यक हो जाता है।

संदर्भ सूची

1. कबीर ग्रंथावली – श्यामसुंदर दास
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद शुक्ल
3. राग विराग – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
4. चांद का मुॅह टेढ़ा ळे – गजानन माधव मुक्तिबोध
5. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी